भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा देश और विदेश में हिंदी का प्रचार-प्रसार

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् देश और विदेश में हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है। हिंदी को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से विभिन्न देशों में मिशनों के सहयोग से भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किए गए हैं। इसी प्रकार, विश्व के कई देशों के विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन के माध्यम से वहां अपनी हिंदी पीठें स्थापित की गई हैं। भारतीय सांस्कृतिक केन्द्रों में स्थानीय हिंदी शिक्षकों और परिषद् के माध्यम से भारत से भेजे गए शिक्षकों द्वारा विदेशी छात्रों को हिंदी सिखाई जाती है और पीठों में भारत से प्रतिष्ठित प्राध्यापकों को नियुक्त किया जाता है जो वहां के विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्यापन का कार्य करते हैं।

हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की ओर से कई देशी और विदेशी साहित्यकारों की पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। हाल ही में, अद्वितीय भारत प्रेमी, महान कोशकार और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान फादर कामिल बुल्के के जीवन और कार्यों के संबंध में श्री सुरेश ऋतुपर्ण द्वारा संपादित 'फादर कामिल बुल्के – भारतीयता के प्रकाश पुंज' नाम से एक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित अनुशंसाओं के अनुपालन के क्रम में परिषद् द्वारा विदेशी भाषा में लिखी पुस्तकों का हिंदी अनुवाद कराकर उन्हें प्रकाशित करने, विदेशों में लगने वाले पुस्तक मेलों में हिंदी साहित्य की पुस्तकें भिजवाने और भारत आने वाले विदेशी हिंदी विद्वानों को अध्येतावृत्ति प्रदान करने की प्रक्रिया भी शुरू की गई है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा भारत में आकर हिंदी अध्ययन करने वाले विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। ज्यादा से ज्यादा विदेशी छात्रों को हिंदी अध्ययन के लिए आकर्षित करने हेतु वर्तमान छात्रवृत्ति की संख्या को दोगुना करने तथा उनके लिए पाठ्यक्रम में सिनेमा और संगीत को शामिल करने की प्रक्रिया भी चल रही है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा हिंदी की लोकप्रियता के लिए समय-समय पर देश और विदेश में कवि सम्मेलन और गोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा है और भविष्य में भी ऐसे आयोजन किए जाते रहेंगे।